बुद्धवर्ष २५५१, आषाढ़ पूर्णिमा, २९ जुलाई, २००७ वर्ष ३७ अंक १

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

For Patrika in various languages, visit: **www.vri.dhamma.org/newsletters**

धम्मवाणी

दुक्खं दुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं।
अरियं चट्ठङ्गिकं मग्गं, दुक्खूपसमगामिनं॥
एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं।
एतं सरणमागम्म, सब्बदुक्खा पमुच्चति॥

धम्मपद--१९१-१९२, बुद्धवग्गो

जो बुद्ध, धर्म और संघ की शरण गया है, जो चार आर्य सत्यों - दुःख, दुःख की उत्पत्ति, दुःख से मुक्ति और मुक्तिगामी आर्य अष्टांगिक मार्ग - को सम्यक प्रज्ञा से देखता है, यही मंगलदायक शरण है, यही उत्तम शरण है। इसी शरण को प्राप्त कर (व्यक्ति) सभी दुःखों से मुक्त होता है।

धर्मचक्र प्रवर्तन

पांच साथी भिक्षुओं ने जब भगवान को अपनी ओर आते देखा तब उन्होंने निर्णय किया कि यह तपभ्रष्ट हो चुका है। अतः न हम इसका स्वागत, न अभिवादन करेंगे और न ही इसका आदर-सत्कार करेंगे। हमारे देश के राजा का पुत्र है। अतः उसे बैठने के लिए आसन अवश्य देंगे। लेकिन भगवान जैसे-जैसे समीप आते गये, उन्होंने देखा कि उनका व्यक्तित्व पहले से कहीं अधिक प्रभावशाली हो गया है। उनके सुंदर मुखमंडल पर अपूर्व तेजस्विता छा गयी है। इसे देख कर वे अपना पूर्व निर्णय भूल बैठे और उनके वंदन-अभिवादन और सेवा-चाकरी में लग गये।

परंतु बातचीत करते हुए उन्हें पूर्ववत 'आयुष्मान' कह कर संबोधित करने लगे। इस पर भगवान ने उन्हें रोका और कहा कि अब वे सम्यक संबुद्ध हो चुके हैं। उनके लिए आयुष्मान शब्द का प्रयोग उचित नहीं है। कुछदेर की बातचीत के पश्चात इन पांचों को विश्वास हो गया कि इन्हें सचमुच सम्यक संबोधि प्राप्त हो चुकी है। तब उनके अनुरोध पर भगवान ने उन्हें धर्म-देशना दी। यह आषाढ़ पूर्णिमा की सुहावनी संध्या का समय था। भगवान बुद्ध का यह प्रथम उपदेश था जो कि उनकी सैद्धांतिक और प्रायोगिक शिक्षा का सार लिए हुए था। इसीलिए धर्मचक्र प्रवर्तन कहलाया।

प्रथम उपदेश

भगवान ने समझाया – आज के गृहत्यागियों ने दो ऐसे मार्ग अपना लिये हैं जो कि अतियों के हैं, अतः धर्मविरुद्ध हैं।

एक मार्ग ऐसा है जिस पर चलने वाला गृहत्यागी कामभोग में डूबा रह कर, कामसुख में तल्लीन रहना श्रेयस्कर समझता है। उन दिनों के चार आचार्य महानास्तिक थे। उनका मत था कि सत्कर्म कोई पुण्य नहीं, उसका कोई सत्फल नहीं। दुष्कर्म कोई पाप नहीं, उसका कोई दुष्फल नहीं। ऐसे आचार्य व्यभिचार तक को बुरा नहीं मानते थे, बल्कि प्रोत्साहन देते थे, जिससे कि उनके श्रद्धालु शिष्यों की संख्या बढ़े। समाज में उन्मुक्त कामभोग के समर्थक अनेक लोग थे।

स्पष्ट है यह एक अति का, अधर्म मार्ग है जो हीन लोगों के लिए है, गँवार लोगों के लिए है, उन लोगों के लिए है जो कि अधर्मपथ के पथिक हैं, जो अनार्यों का मार्ग है और सर्वथा अनर्थकारी है।

जो दूसरा अतियों का अधर्म मार्ग है वह कायक्लेश का मार्ग है, जो दुःखदायी है और अनार्य लोगों द्वारा सेवित है।

भगवान ने इन दोनों के विरुद्ध मध्यम मार्ग खोज निकाला है। इस पर चलने से अंतर्चक्षु खुलते हैं, ज्ञानचक्षु खुलते हैं, प्रज्ञाचक्षु खुलते हैं, विद्या उत्पन्न होती है। अविद्या नष्ट होती है। मुक्ति का आलोक उत्पन्न होता है। यह मार्ग जो सारे विकारों का उपशमन कर शांति प्रदान करनेवाला है, अभिज्ञान देने वाला है, संबोधि देने वाला है।

यह शील, समाधि, प्रज्ञा का मार्ग है, जो आर्यों का मार्ग है। यह आठ अंगों वाला मार्ग है। वे आठ अंग हैं – सम्यक् दृष्टि, सम्यक संकल्प (प्रज्ञा के लिए); सम्यक वचन, सम्यक कर्मांत, सम्यक आजीविका (शील-सदाचार के लिए); सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति (सजगता), सम्यक समाधि (समाधि के लिए)। यही मध्यम मार्ग है जिस पर चलने वाला व्यक्ति आर्य बन जाता है। भवमुक्त हो जाता है।

आषाढ़ पूर्णिमा के दिन लोकगुरु भगवान बुद्ध ने धर्मचक्र प्रवर्तित किया। संबोधि प्राप्त करने के बाद यह उनका पहला उपदेश था। तब से अपने यहां की सभी परंपराओं में आषाढ़-पूर्णिमा 'गुरुपूर्णिमा' कहलाने लगी। ऐसा होना उचित ही था।

चार आर्यसत्य

तब तथागत ने इन चार आर्यसत्यों को व्याख्यात किया जो कि उनकी व्यावहारिक शिक्षा के सार हैं। वे हैं –

१) दुःख आर्यसत्य २) दुःख-समुदय आर्यसत्य ३) दुःख-निरोध आर्यसत्य ४) दुःख-निरोध-गामिनी प्रतिपदा आर्यसत्य।

१. (क) पहले स्वीकारें कि यह दुःख है।

(ख) फिर यह स्वीकारें कि इसे अंतिम परिधि तक अनुभव करके जानना है।

(ग) फिर वस्तुतः उस अवस्था तक पहुँचें जहां कहा जा सके कि इसकी अंतिम परिधि तक इसे परिपूर्ण रूप से जान लिया है।

२. (क) पहले स्वीकार करें कि यह दुःख की उत्पत्ति का कारण है।

(ख) फिर समझें कि इस कारण को जड़ से उखाड़ना है।

(ग) फिर उस अवस्था तक पहुँचें जहां कह सकें कि दुःख के कारण का मूलोच्छेदन कर दिया है।

३. (क) पहले स्वीकार करें कि दुःख-निरोध हो सकता है, यानी दुःख का पूर्णतया उन्मूलन किया जा सकता है।

(ख) फिर समझें कि दुःख का पूर्णतया उन्मूलन करना है।

(ग) फिर उस अवस्था तक पहुँचें जहां जा कर यह कहा जा सके कि दुःख का पूर्णतया उन्मूलन कर दिया है।

४. (क) यह समझें कि दुःख के पूर्णतया उन्मूलन करने का कोई मार्ग है।

(ख) फिर यह निश्चय करें कि इस मार्ग पर बार-बार चलना है और इसे अनुभव द्वारा पुष्ट करना है।

(ग) फिर उस अवस्था पर पहुँचना है जहां कि यह कहा जा सके कि इस मार्ग पर बार-बार चल कर इसे पूर्णरूप से अनुभवित कर लिया है।

शील, समाधि, प्रज्ञा की परिपुष्टि द्वारा ही इन चार आर्यसत्यों को अनुभूतियों के स्तर पर परिपुष्ट किया जा सकता है।

१. दुःख की अंतिम परिधि तक उसे अनुभव करके जानना है। इसके लिए सारे अनित्यधर्मी, दुःखधर्मी, अनात्मधर्मी लोकीय क्षेत्र को अनुभूति पर उतार कर, उसका अतिक्रमण करने पर ही यह अवस्था प्राप्त हो सकती है।

२. दुःख के कारण को जड़ से उखाड़ने के लिए भी सारे लोकीय क्षेत्र की यात्रा करनी होती है। तृष्णा, जो सर्वव्यापी है उसका पग-पग पर उन्मूलन करना होता है।

३. दुःख का पूर्णतया उन्मूलन करने के लिए भी संपूर्ण दुःखमय लोकीय क्षेत्र को अनुभूति पर उतारना होता है। इसका अतिक्रमण करने पर ही दुःख-निरोध अवस्था प्राप्त होती है।

४. शील, समाधि, प्रज्ञा ही दुःख के सर्वथा उन्मूलन का आर्यमार्ग है। इसको बार-बार भावित करके, यानी अनुभवित करके, भवमुक्ति-फल प्राप्त किया जा सकता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि चारों आर्यसत्यों के बारे में श्रुतज्ञान होना आवश्यक है, परंतु यह पर्याप्त नहीं है। इसके आगे इसका चिंतन होना भी आवश्यक है, परंतु वह भी पर्याप्त नहीं है। चारों आर्यसत्यों का फल प्राप्त करने के लिए भावनामयी प्रज्ञा जगाकर उसमें परिपुष्ट होना आवश्यक है। उसमें प्रतिष्ठित होना आवश्यक है। स्वानुभूति द्वारा प्रज्ञा में स्थित हुए बिना कोई भवमुक्त अरहंत नहीं हो सकता। केवल उपदेशों के श्रवण से और मात्र चिंतन-मनन से कोई स्थितप्रज्ञ नहीं हो सकता। और बिना स्थितप्रज्ञ हुए कोई अरहंत नहीं हो सकता।

भगवान ने पांचों साथियों को चारों आर्यसत्यों में परिपुष्ट होने की, यानी प्रज्ञा में परिपुष्ट होने की, विधि बतायी। एक-एक करके पांचों भिक्षु स्रोतापन्न की, निर्वाण की, विमुक्ति की अवस्था प्राप्त करते हुए सात दिनों में स्थितप्रज्ञ हो गये, भवमुक्त अरहंत हो गये। ऐसे अरहंतों के लिए ही अपनी एक परंपरा में कहा गया – **तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।** *(श्रीमद्भगवद्गीता- २.५८)*

चार आर्यसत्यों के प्रति भ्रांतियां

जब भगवान बुद्ध की मूल वाणी के साथ-साथ उनकी भगवती विपश्यना विद्या भी देश से नेस्तनाबूद हो गयी, तब थोड़े से विरोधी तत्त्वों ने और अधिकांशतः अज्ञानी लोगों ने उनकी शिक्षा के बारे में मनमानी मनगढ़ंत बातें फैलानी शुरू कर दीं। उनके द्वारा उपदेशित चार आर्यसत्यों के बारे में सारे देश में धुआंधार गलत प्रचार फैलने लगा। परिणामस्वरूप अनेक अच्छे-अच्छे समझदार विद्वान भी गुमराह हो गये और इन भ्रांतियों को बढ़ावा देने लगे। एक विद्वान ने यह आवाज उठायी कि जिनकी शिक्षा में चार-बार दुःख-ही-दुःख की चर्चा की गयी है, जिसमें सुख का कहीं नाम तक नहीं है, उस घोर दुःखवादी की शिक्षा हमारे किस काम की? एक तर्क यह भी चल पड़ा कि जो सुख की ओर न ले जाय, वह विद्या लुप्त होनी ही थी और इस कारण भी विपश्यना भारत से विलुप्त हुई।

संसार के सबसे बड़े सुखवादी महापुरुष को दुःखवादी ही नहीं, घोर दुःखवादी कहकर लांछित करना तथ्यों से कितना दूर है! शायद आलोचकों ने दुःखनिरोध का अर्थ ही नहीं समझा। कोई चिकित्सक एक रोगी को बताए कि यह तेरा रोग है, यह रोग का कारण है, कारण का निवारण होने पर सदा के लिए रोग का निवारण हो जायगा। यह उपचार है, औषधि है, जिसके सेवन से रोग के कारण का और साथ-साथ रोग का पूर्णतया निवारण हो जायगा। ऐसे निरोगवादी वैद्य को कोई रोगवादी कहकर लांछित करे, और वह भी इसलिए कि उसने रोग शब्द का चार-बार उल्लेख किया है, तब उस लांछित करने वाले व्यक्ति का कथन हास्यास्पद ही कहलायगा। इसी प्रकार महाभिषक (महावैद्य) भगवान बुद्ध को घोर दुःखवादी कहने वाले व्यक्तियों का कथन भी हास्यास्पद ही कहलायगा। तिस पर भी बुद्ध के दुःखवादी होने का गलत प्रचार अपने देश में खूब जम कर हुआ। लोग भूल ही गये कि जो साधक को निर्वाण के परम सुख– **निब्बानं परमं सुखं** *(धम्मपद - २०३)*– की ओर ले जाय, उसे हम दुःखवादी किस मुँह से कहें?

भगवान बुद्ध के जीवनकाल में ही नहीं, आज २,६०० वर्षों के बाद भी बुद्धानुयायी देशों में इन शब्दों की गूंज सुनायी देती है –

सुखो बुद्धानं उप्पादो, सुखा सद्धम्मदेसना। *(धम्मपद - १९४)* यानी

– बुद्धों का उत्पन्न होना सुखद है और सुखद हैं उनके धर्मोपदेश।

उनकी शिक्षा में सुख का उपदेश भरा पड़ा है। सबके लिए सुख की कामना का मंगल उद्घोष भरा पड़ा है।

ऐसे सुखवादी महापुरुष को दुःखवादी ही नहीं, घोर दुःखवादी कहने वाले अपने संकीर्ण हृदय की सांप्रदायिकता अथवा नितांत अज्ञानता का ही ज्ञापन करते हैं।

बुद्ध पर एक और हास्यास्पद लांछन यह लगाया गया कि वे

दु:ख को आर्य कैसे कहते हैं? दु:ख भी कभी आर्य हुआ है भला! देश से विपश्यना लुप्त हो गयी तभी समाज में ऐसी बहकाने वाली बातें चल पड़ीं। यदि विपश्यना कायम रहती तब लोग जानते कि इस साधना द्वारा अधोगति के सभी दु:खदायी कर्मसंस्कारोंकी उदीर्णा हो-हो कर उनकी निर्जरा हो जाती है, उनका क्षय हो जाता है। साधक अधोगति से नितांत विमुक्त हो जाता है। अधोगति के फल देने वाले उसके सारे पुराने संचित कर्मसंस्कारनष्ट हो चुके होते हैं और ऐसे अधोगतिदायक नये कुसंस्कारवह बना नहीं पाता। तब वह इंद्रियातीत, नित्य, शाश्वत, ध्रुव, परम सत्य का साक्षात्कार कर लेता है। तभी अनार्य से आर्य बनता है। स्वयं विपश्यना साधना किये बिना कोई व्यक्ति इस तथ्य को कैसे समझ सके भला? नहीं समझ पाता, इसी कारण अच्छे-से-अच्छा विद्वान भी गुमराह हो जाता है। विपश्यना साधना स्वयं किये बिना यह तथ्य कोई कैसे समझ पायगा कि दु:ख अपने आप में आर्य नहीं है। प्रत्युत दु:ख के संपूर्ण क्षेत्र को तटस्थभाव से अनुभव कर लेने पर ही साधक दु:ख से विमुक्त हो कर आर्य बनता है, सज्जन बनता है। दु:शीलता से मुक्त होता है। अनार्यपने से मुक्त होता है। विपश्यना विद्या के लुप्त हो जाने से देश से अध्यात्म की इस कल्याणी सच्चाई की जानकारी भी पूर्णतया लुप्त हो गयी। तभी ऐसे भ्रामक प्रश्न उठ खड़े होने लगे। लोग भूल ही गये कि अध्यात्म की उत्तुंग ऊंचाइयों पर पहुँचा हुआ व्यक्ति ही आर्य कहलाने योग्य होता है और इन चारों सच्चाइयों का साक्षात्कार करने में प्रयत्नशील साधक इन ऊंचाइयों की ओर शनैः शनैः अग्रसर होता है।

मंगल मित्र,
स. ना. गो.

नए विपश्यना केंद्र

धम्मरत, रतलाम विपश्यना केंद्र

मध्य प्रदेश के मालवा पठार पर स्थित रतलाम नगर, पश्चिम रेल्वे का महत्त्वपूर्ण स्टेशन है। यह उज्जैन से ८० कि.मी., इंदौर से १२५ कि.मी., भोपाल से ३०० कि.मी. तथा गुजरात और राजस्थान की सीमाओं से लगभग ३० कि.मी. की दूरी पर स्थित है। मौसम के अनुसार देखें तो यहां गर्मी, सर्दी और बरसात तीनों का औसत सम है। यहां पिछले कई वर्षों से अकें द्रीय शिविर लगते रहे हैं और क्षेत्र में स्थानीय साधकों की संख्या अच्छी हो गयी है। अत: सब ने मिल कर केंद्र के लिए प्रयास किया। इस हेतु ८.५ बीघे जमीन मिल गयी और शीघ्र ही निर्माण कार्य आरंभ हो रहा है। पूज्य गुरुदेव ने इसे **'धम्मरत'** नाम से विभूषित किया है। निश्चय ही यहां के लोग ध्यान और धम्म में रत रहते हैं।

फिलहाल लगभग ४० साधकों हेतु निर्माण कार्य आरंभ करते हुए २४-१०-०७ को पहला शिविर लगना निश्चित कर दिया गया है। अधिक जानकारी और पंजीकरण के लिए संपर्क –डॉ. नारायण वाधवानी, वाधवानी नर्सिंग होम, स्टेशन रोड, रतलाम- ४५७ ००१. फोन –०९८२७५०३५८२, कार्या.(०७४१२) २३०९३५; निवास- २६७ ५३३, मो. ९४२५३-६४९५६

धम्मपोक्खर, विपश्यना केंद्र, पुष्कर

राजस्थान के प्रख्यात पुष्कर तीर्थ से १४ कि.मी. की दूरी पर **'धम्मपोक्खर'** विपश्यना केंद्र का निर्माण कार्य आरंभ हो गया है। लगभग २९ बीघे जमीन का पूरा मास्टर प्लान बना लिया गया है जिसमें साधना कक्ष सहित सभी आवश्यक भवन और दूसरे फेज में पगोडा आदि भी शामिल हैं। अरावली पर्वत की तलहटी में स्थित प्राकृतिक सौंदर्य और ध्यान-गुफाओं के लिए विख्यात इस स्थान को सदियों से प्राचीन ऋषि-मुनियों की तपोभूमि और तीर्थ के रूप में देखा जाता रहा है। इस क्षेत्र में स्थित यह विपश्यना केंद्र निश्चय ही साधकों की वास्तविक तपोभूमि बनेगा।

तपोभूमि के निर्माण में योगदान के इच्छुक साधक चाहें तो निम्न नाम-पते पर संपर्क कर सकते हैं – **विपश्यना केंद्र, पुष्कर** (अजमेर) (८०-जी के अंतर्गत आयकरमुक्त), द्वारा – (१) श्री रवि तोषणीवाल, पुष्पवाटिका, गोखले मार्ग, अजमेर- ३०५००१. फोन –०१४५-२६२७७२७, मो. ०९८२९०-७१७७८. E-mail: info@toshcon.com (२) श्री अनिल धाड़ीवाल, ०९८२९०-२८२७५.

धम्ममालवा, इंदौर का निर्माणाधीन केंद्र

मार्च २००६ को मध्य प्रदेश के मालवा पठार की सुरम्य भूमि पर धम्ममालवा केंद्र की स्थापना हुई। यह म. प्र. की औद्योगिक राजधानी इंदौर के रेलवे एवं बस स्टेशन से १२ कि.मी. की दूरी पर, हातोद रोड पर स्थित है। सात एकड़ भूमिखंड पर १२० साधकों के लिए ध्यानकक्ष, पगोडा, आवास, रसोईघर, भोजनालय आदि की योजना है। फिलहाल एक छोटे ध्यानकक्ष का निर्माण हो चुका है। १२ निवास बन गये हैं और १८ निवास निर्माणाधीन हैं। ध्यानकक्ष में हर माह के **प्रथम रविवार** को **एक दिवसीय** शिविर हो रहे हैं तथा अन्य रविवारों को प्रात: ९:३० से ११:३० तक **सामूहिक साधना** होती है। वर्षा ऋतु के पश्चात यहां पूर्ण शिविर लग रहा है। जो भी साधक-साधिकाएं निर्माण के इस महान पुण्य में भागीदार बनना चाहें, इस पते पर संपर्क कर सकते हैं – 'इंदौर विपश्यना इंटरनेशनल फाउंडेशन ट्रस्ट, ५८२, एम. जी. रोड, 'लाभगंगा' इंदौर, (म.प्र.); फोन –०७३१-३९८३३१३ या मो. ९८९३७-८८९०९, ९८९३०-२९१६७.

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि पर

पालि प्रशिक्षण

'वर्ष २००७-२००८ के लिए विज्ञप्ति'

एक महीने का सघन पालि-हिंदी प्रारंभिक पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००५ में प्रारंभ हुआ था। इस वर्ष इसका तीसरा सत्र है। यह सत्र **४ दिसंबर २००७ (सुबह) से १ जनवरी २००८ (सुबह)** तक बिना किसी अवकाश के चलेगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ अक्तूबर २००७** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं – वे साधक जिन्होंने (१) पांच दस दिवसीय विपश्यना शिविर, तथा (२) एक सतिपट्ठान शिविर, किये हों (३) पंचशील का पालन करते हुए, (४) दो वर्ष से प्रतिदिन दो घंटे की नियमित साधना करते हों एवं (५) विद्या के प्रति समर्पित हों। बीस दिवसीय शिविर किये हुए साधक को वरीयता दी जायगी।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता – १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

पाठ्यक्रम के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

एक महीने का सघन पालि-हिंदी उच्च पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००६ में पहली बार प्रारंभ किया गया था। इस वर्ष इसका द्वितीय सत्र है। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम **२ जनवरी २००८ (सुबह) से ३० जनवरी २००८ (सुबह)** तक बिना अवकाश के चलेगा

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ अक्तूबर २००७** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं – ➪ इस पाठ्यक्रम के लिए उपरोक्त योग्यताओं के साथ व्ही. आर. आई. द्वारा आयोजित एक महीने का सघन पालि-हिंदी **प्रारंभिक पाठ्यक्रम** पूरा किया होना अनिवार्य है। उन विपश्यी साधकों को जिनके पास उपरोक्त योग्यताएं हैं तथा जिन्हें पालि का प्रारंभिक ज्ञान है, उन्हें वरीयता दी जायगी । ➪➪ इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता – ➪ १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

➪➪ पाठ्यक्रम के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

इनके लिए आवेदन-पत्र कृपया **विपश्यना विशोधन विन्यास,** धम्मगिरि, इगतपुरी से प्राप्त कर सकते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. सुश्री मोहिनी दलाल, मुंबई;
धर्मप्रसार की सेवा
२. सुश्री सुधा दलाल, मुंबई;
धर्मप्रसार की सेवा
३-४. श्री अशोक एवं श्रीमती वैशाली घिरनीकर, मुंबई; धर्मप्रसार की सेवा
५. श्री सुधीर पई, मुंबई; धर्मप्रसार की सेवा
6. Dr. Bandhuvarobhas Svetarundra, *Thailand*; Spread of Dhamma
7. Ms Jittinun Jewcharoensakul, *Thailand*;
To serve *Dhamma Ābhā*
8. Dr. Boonchuey Sathaphatayavongs, *Thailand*; Spread of Dhamma
9-10. Mr. Ittiporn and Mrs. Monta Thong-Innate, *Thailand*;
To serve *Dhamma Suvanna*
11. Mrs. Ladachat Saingam, *Thailand;*
To serve *Dhamma Dhānī*
12-13. Mr. Tim & Mrs. Karen Donovan, *USA;*
Spread of Dhamma in Bay Area, USA

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री प्रवीणचंद्र देसाई, मुंबई
२. श्री विनोदचंद्र पारेख, मुंबई
३-४. श्री योगेश एवं श्रीमती मयूरी शाह, मुंबई
5. Mr. Kam-Ling Chiu, *Hong Kong*
6. Dr. (Miss) Wilaiwan Seetasuwan, *Thailand*;
To assist the area teachers in serving *Dhamma Kamala*
7. Dr. Vichit Leenutapong, *Thailand*;
To assist the area teachers in serving *Dhamma Kañcana*
8. Mr. Chalerm Munkongdee, *Thailand*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. सुश्री चारु गुप्ता, दिल्ली
2-3. Mr. Ran & Mrs. Avital Mayroz, *Israel*

बाल शिविर शिक्षक

१. श्री गौरव बुधिराजा, रोहतक
२. श्रीमती सीता अग्रवाल, हापुड़

पदमुक्त

१. श्री राजा एम. को सहायक आचार्य की जिम्मेदारी से मुक्त किया गया है।

दोहे धर्म के

प्रज्ञा जागे बलवती, देवे चित झकझोर।
निरमल मन निर्ग्रंथ हो, करुणा प्रेम विभोर॥

बंधन क्या है समझ लें, तो कर देवें चूर।
बिन समझे बंधन बढ़ें, मुक्ति रहेगी दूर॥

धर्मचक्र चालित करें, प्रज्ञा लेंय जगाय।
जिससे सारी गंदगी, मन पर की कट जाय॥

काम क्रोध मद मोह में, जीवन दिया गँवाय।
जागे विमल विपश्यना, जनम सुफल हो जाय॥

जब देवे भवचक्र को, धर्मचक्र से काट।
तो विमुक्ति निर्वाण का, वैभव बढ़े विराट॥

वही पूज्य है, बुद्ध है, महावीर है सोय।
जो खोले निज ग्रंथियां, काय विपश्यी होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोन: २४९३ ८८९३, फैक्स: २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

दुख आयां भोगण लगै, दूणो होतो जाय।
दुख आयां देखण लगै, दुक्ख बिनसतो जाय॥

लोकचक्र नै त्याग दै, धरमचक्र लै धार।
लोकचक्र रै कारणै, भोगै दुक्ख अपार॥

समझां दुख रै मूळ नै, लेवां मूळ उखाड़।
तो खुल ज्यावै मुक्ति रा, आपै बंद किवाड़॥

अंग अंग जाग्रत हुवै, उदय अस्त रो ग्यान।
चित्त निपट निरमळ हुवै, प्रगटै पद निरवाण॥

बाहर बाहर भटकतां, मोक्ख न पायो कोय।
जो भी भीतर देखियो, मुक्त होगयो सोय॥

तेल चुक्यो बाती चुकी, लौ हुयी अंतरधान।
मूरख पूछै कित गयो, अरहत पा निरवाण?

आकांक्षा इंटरप्राईसेस
ई - १/८२, अरेरा कालोनी, भोपाल (म. प्र.) - ४६२०१६
फोन: (०७५५) २४६१२४३, २४६२३५१; फैक्स: (०७५५) २४६८१९७
Email: aeent@airtelbroadband.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५१, आषाढ़ पूर्णिमा, २९ जुलाई, २००७**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** १९१५६/७१. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org